गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario

सम्पादक
डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला

गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario

संरक्षक

श्री अनुराग शुक्ल

संपादक

डॉ० (श्रीमती) अंजू शुक्ला

संकल्प प्रकाशन

कानपुर (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-944964-2-7

पुस्तक का नाम :
गाँधीवादी विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

संपादक
डॉ० (श्रीमती) अंजू शुक्ला

© प्रकाशक

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14 नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
आर्यन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 795/-

Relevance of Gandhian Thoughts in Present Scenario
Editor : Dr. Smt. Anju Shukla
Price : Seven Hundred Ninty Five Only.

अनुक्रम

1. समाज कल्याण के आधार पर गाँधीवादी विचार — 15
डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला

2. वर्तमान में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता — 21
डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

3. गाँधी युग में महिलाओं की स्थिति — 24
डॉ. जयश्री शुक्ल

4. गाँधी दर्शन — 29
डॉ. नागलगिद्दे मारुति

5. गाँधीजी का अहिंसा दर्शन — 32
डॉ. (सुश्री) भावना कमाने

6. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी — 36
डॉ. सपना कौर

7. भारतीय राजनीति और गाँधी — 41
डॉ. (श्रीमती) सुजाता सेमुएल

8. गाँधीजी के सामाजिक विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता — 46
शिखा श्रीवास्तव

9. गाँधीवाद और हिंदी कविता — 49
डॉ. (श्रीमती) गायत्री बाजपेयी, डॉ. अश्वनी कुमार बाजपेयी

10. गाँधीजी के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता — 51
राहुल श्रीवास्तव

11. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम — 58
डॉ.(श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी, डॉ.(श्रीमती) शारदा दुबे

12. भारतीय राजनीति, इतिहास और गाँधीवाद — 63
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. जैनेन्द्र कुमार पटेल

13. भारतीय समाज व्यवस्था और गाँधी — 68
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, डॉ. बी. जॉन, रवि प्रकाश चौधरी

14. वर्तमान शिक्षा की चुनौतियाँ एवं गाँधी — 74
डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, अमर सिंह ठाकुर

15. गाँधीजी के विचारों के विभिन्न आयाम — 80
डॉ. स्नेहलता निर्मलकर, चन्द्रिका चौधरी

2

वर्तमान में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

आधुनिक भारत के राष्ट्रपिता गाँधीजी विश्व की महान विभूतियों में से एक हैं, जो केवल भारत की जनता के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व के युग पुरुष कहे जाते हैं। उनके चरित्र की रश्मियों का प्रतिबिम्ब भारतीय जनता के हृदय में किसी न किसी रूप में सदैव आलोकित होता रहेगा। गाँधीजी के सिद्धांतों के ही प्रगति का मापदंड भारत प्रगति के पथ पर अग्रेसर हुआ है। गाँधीजी के महान आदर्शों में आत्मबल एवं आत्मानुशासन की प्रेरणा भारतीय जीवन के लिए एक दिव्य अनुभूतिशील रही है। गाँधीजी ने भारतीय जीवन को नैतिक उत्कर्ष प्रदान किया वह विलक्षण है। अतः गाँधीजी का जीवन भारतीय इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।

गाँधीजी को समझना आसान नहीं, विशेषतः अगर बात उनके अर्थशास्त्र की हो तो। इसका मुख्य कारण यह है कि गाँधी विश्व की अपनी नैतिक समझ के कारण अपने निष्कर्षो तक पहुँचे न कि विकास, निवेश, माँग या पूर्ति की अपनी समझ के कारण। यही वजह है कि उनके अर्थशास्त्र के विचारों को वामपंथी–दक्षिणपंथी–मध्यमार्गी या कम्युनिस्ट–समाजवादी–पूँजीवादी विचाराधाराओं में रख पाना सम्भव नहीं हैं।

महात्मा गाँधी एक महान अध्यात्मिक पुरुष तथा नेता होने के अतिरिक्त एक महान विचारक भी थे, जिन्होंने भारत में समाजवाद की स्थापना पल्लवित कर अनेक विषयों पर नि.संकोच विचार व्यक्त किये जैसे– राजनैतिक सामाजिक आर्थिक, नीति संबंधी विचारों के साथ–साथ धर्म, सत्य, अहिंसा, राष्ट्रवाद एवं अंतरराष्ट्रीयवाद आदि। वे एक महान समाज सुधारक के रूप में जाने जाते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में उनकी महानता अविस्मरणीय है। यही कारण है कि न केवल भारतवासियों ने ही नहीं बल्कि विदेशियों ने भी उनकी तुलना प्रसिद्ध युनानी दार्शनिक सुकरात तथा प्रसिद्ध अमेरिकी राष्टपति अब्राहम लिंकन जैसे महान पुरुषों से की है, क्योंकि गाँधीजी ने न केवल भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका निभायी वरन् उन्होंने भारत को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाने और

आर्थिक असमानता के भेद को कम करने के लिए अपने विचार स्पष्ट कि
जिसके कारण आचार्य नरेंद्र देव ने गाँधीजी को आधुनिक युग का एक अद्वितीय
युग पुरुष कहा है।

वर्तमान में गाँधीजी की अनेक धारणाओं में से आर्थिक विचारों की
पर गंभीरता से विचार करना आवश्यक है, क्योंकि गाँधीजी के आर्थिक वि
व्यवहार में कल्पना बनकर रह गये हैं। वर्तमान बदलते परिवेश को देखते
ऐसा लगने लगा है कि हम गाँधीजी और उनके विचारों को विस्मृत करते जा
हैं क्योंकि आज विश्व परिदृश्य तेजी से परिवर्तित हो रहा है। विश्व राजनीति
मुक्त अर्थव्यवस्था को प्राथमिकता दी जा रही है ताकि वह विश्व में अपना प्रभ
स्थापित कर सके। ऐसी परिस्थितियों में गाँधीजी के आर्थिक विचार आज
प्रासंगिक हैं अथवा नहीं इस पर राजनीतिज्ञों, दार्शनिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं
के लिए के लिए गंभीरता से विचार करना है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधीजी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता जानने के
लिए गाँधीजी के आर्थिक विचार जानना आवश्यक है और यह भी देखना है कि
उनके विचार वर्तमान आर्थिक नीतियों में कहाँ तक समायोजित हैं क्योंकि
गाँधीजी के आर्थिक विचार मुख्यतः तीन बिन्दुओं पर आधारित है।

आज भारत में इसकी सार्थकता के लिए अखिल भारतीय बुनकर संगठन,
चरखा संघ, श्रमिक संघ, आदि को सार्थक रूप देने का प्रयास किया गया है।
बड़े–बड़े औद्योगिक घराने तथा पूँजीपति कर रूप में अपनी सम्पति का कुछ हिस्सा
सरकार को देते हैं। सरकार गरीब व्यक्तियों के विकास के उपाय कर रही है। यह
है तो गाँधीजी के विचार पर आधारित है। किन्तु इसका रूप बदल गया है।

आर्थिक क्षेत्रों में स्वदेशी का अर्थ विकेंद्रित उत्पादन है शब्दों में प्राथमिकता
आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न क्षेत्रों को आत्मनिर्भर रहना चाहिए, गाँव
जरूरतों के लिए हमें एक दूसरे पर निर्भर रह सकते हैं। इस प्रकार स्वदेशी में
स्वावलम्बन और परस्पर परावलम्बन दोनों ही आ जाते हैं। गाँधीजी आर्थिक
सामानता के पक्ष में थे इसलिए उन्होंने ग्रामोद्योग योजना के बारे में अपने विचार
व्यक्त किए। उनका मानना था पूरा का पूरा खादी अपना लें और खादी ग्रामोद्योग
द्वारा अपना जीवन विकसित करें। खादी अर्थव्यवस्था की पहली सीढ़ी थी है।
गाँधीजी ने स्वदेशी को आर्थिक आधार का रूप देते हुए कहते हैं कि शहरों द्वारा
ग्रामीणों का शोषण बंद किया जाना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार देशी उद्योगों को
विदेशी निर्माताओं से संरक्षण प्रदान किया गया है उसी प्रकार कुटीर उद्योगों को
भी मशीन से बनी वस्तुओं के विरुद्ध संरक्षण दिया जाना चाहिए।

गाँधीजी बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के कट्टर विरोधी थे। उनका विश्वास
था कि बड़े पैमाने के उत्पादन से ही विभिन्न सामाजिक और आर्थिक दोष उत्पन

हुए हैं और वे परिश्रम से कतराने लगते क्योंकि मशीनों का प्रयोग मनुष्य को आलसी बना देता है। गाँधीजी ने इसलिए विकेंद्रित अर्थव्यवस्था का पक्ष लिया अर्थात् एक ऐसी अर्थव्यवस्था को उत्तम समझा जिसमें श्रमिक स्वयं अपना स्वामी हो। महात्मा गाँधी का विश्वास था कि भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले और गरीब देश के लिए मशीनों का प्रयोग लाभदायक नहीं होगा। अधिक जनसंख्या को काम पर लगाने की दृष्टि से उत्पादन की ऐसी प्रणाली काम में लानी होगी जिसमें अधिकाधिक श्रमिकों की खपत हो। औद्योगिकरण के विरुद्ध होते हुए भी गाँधीजी उस सीमा तक मशीनों के प्रयोग को अनुमति देते थे जहाँ वे सारे समाज के हित में बाधक न बनें। गाँधीजी का बल रचनात्मक उद्योगों पर नहीं। वे गृह उद्योगों में काम आनेवाली मशीनों के प्रयोग और सुधार के समर्थक थे उन्हें इस बात से भी बड़ा कष्ट पहुँचा था कि भारत के कपड़े के एक मात्र कुटीर उद्योग को नष्ट करने के लिए प्रयत्न किए जाएँ।

गाँधीजी ने शरीर श्रम को भी महत्व प्रदान किया है इसलिए वे बड़ी – बड़ी मशीनों के स्थान पर लघु उद्योग स्थापित करने के पक्ष में थे। ग्रामीण अर्थव्यवस्था की जो कल्पना गाँधीजी ने की है उसमें शोषण की बिल्कुल गुंजाईश नहीं है। गाँधीजी भारत की आर्थिक सच्चाईयों से वाकिफ थे और वे भली–भाँति जानते थे कि भारत के करोड़ों लोगों को रोजगार देने के लिए साहित्यिक शिक्षा के साथ–साथ औद्योगिक शिक्षा देने के पक्ष में थे। उनका कहना थ कि भारत शहर में नही गाँव में रहता है। गाँव वाले अधिकतर गरीब हैं क्योंकि उनमें अधिकतर बेरोजगार है या अल्परोजगार की स्थिति में हैं इनको उत्पादक रोजगार देना होगा जिससे राष्ट्र की सम्पति में वृद्धि होगी। वह कहते थ की देश की वर्तमान स्थिति में जब मानव शक्ति असीम है और उसकी तुलना में भूमि और अन्य प्राकृतिक साधन कम हैं तो कुटीर उद्योग ही रोजगार दे सकते हैं वह पश्चिमी देशों की तरह मशीनों पर आधारित पूँजी प्रधान उद्योग नहीं चाहते थे।

गाँधीजी के विचार में एक ओर जहाँ खादी गरीब के लिए रोटी कमाने का सम्मानीय व्यवसाय है वहीं यह अहिंसक तरीकों से स्वराज हासिल करने का एक अतिरिक्त और अपेक्षाकृत अधिक मूल्यवान अस्त्र भी है। उनकी दृष्टि में खादी भारतवासियों की एकता, उनकी आर्थिक स्वाधीनता और समानता का प्रतीक है। खादी शास्त्र परमार्थ का शास्त्र है और इसी कारण इसे गाँधीजी ने सच्चा अर्थशास्त्र कहा है। खादी की मानसिकता का अर्थ है जीवन के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन और वितरण का विकेंद्रीकरण। इसलिए प्रत्येक गाँव अपनी जरूरत की सभी चीजों का उत्पादन करे और साथ में शहरों की आवश्यकताओं के लिए भी कुछ अतिरिक्त माल तैयार करे।'' मुझे विश्वास है कि हाथ की कताई और बुनाई के पुनरुद्धार से भारत के आर्थिक और नैतिक पुनः जीवन में सबसे बड़ा योगदान होगा।

■■